दि० - 15-10-2020 कक्षा - बी० ए० तृतीय वर्ष

भारत में राष्ट्रवाद का विकास

भावानात्मक पक्ष भौतिक इकाई

Key points - (1) राष्ट्र के लिए एक ऐसी भावना का होना आवश्यक है जो व्यक्तियों के समूह को आत्मिक रूप से जोड़ती है और जब राष्ट्र व्यक्ति की पहचान बन जाता है तो राष्ट्रीयता जन्म लेती है और जब राष्ट्रीयता एक विचारधारा का रूप ले लेती है तब राष्ट्रवाद का उदय होता है और यही राष्ट्रीय आन्दोलन / स्वतन्त्रता संघर्ष की उत्पत्ति का महत्वपूर्ण कारक बनता है।

(२) राष्ट्रवाद कोई अचानक उत्पन्न होने वाली विचारधारा नहीं है बल्कि यह एक दीर्घकालिक विकास प्रक्रिया है भारत में जैसे - जैसे औपनिवेशिक शासन विभिन्न अवस्थाओं से गुजरा, वैसे - वैसे भारतीय राष्ट्रवाद भी विकसित होता गया।

(3) कुछ इतिहासकार भारत में राष्ट्रवाद की उत्पत्ति को प्रेरण-अनुक्रिया वाद से समझाने का प्रयास करते हैं जिसका आशय है ब्रिटिश सरकार ने अपने हितों के लिए भारत में जो व्यवस्थाएँ लागू की भारतीयों ने उसी पर अनुक्रिया कर राष्ट्रवादी भावना को विकसित किया। उल्लेखनीय है कि भारत में राष्ट्रवाद की उत्पत्ति एक आधुनिक संकल्पना

Scanned with CamScanner

मानी जाती है।

भारतीय राष्ट्रवाद के उत्पत्ति/विकास के कारणो को निम्नलिखित आयामों के सन्दर्भ में देखा जा सकता है-

(1) विदेशी आधिपत्य :- राष्ट्रवाद व राष्ट्रीय आन्दोलन की उत्पत्ति का यह एक सर्वप्रमुख कारण माना जाता है कि क्योंकि व्यावहारिक रूप से राष्ट्रवाद की उत्पत्ति के लिए एक शोषणकारी प्रतिपक्ष की आवश्यकता होती है। इसी सन्दर्भ में औपनिवेशिक शोषण ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास की नैतिक, बौद्धिक व भौतिक सभी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर ली थी।

(2) आधुनिक शिक्षा :- अंग्रेजों ने भारत में शैक्षणिक प्रणाली की आंग्ल - प्राच्य विवाद को रोककर आंग्ल - शिक्षा को अपनाया इस शिक्षा प्रणाली का मूल उद्देश्य प्रशासन में भारतीयो का सहयोग लेना था। जिससे कम के वेतन में अधीनस्थ कर्मचारी (क्लर्क) मिल सके। इसके साथ ही एक ऐतिहासिक तथ्य भी महत्वपूर्ण था कि शिक्षा प्रणाली के द्वारा मानसिक गुलामी सृजित कर अपने साम्राज्य को स्थायी रूप दिया जा सकता है। तत्कालीन ब्रिटिश उदारवादी विचारको ने इसे भारत के आधुनिकीकरण से जोड़ा।

किन्तु इस शिक्षा का मन्तव्य स्पष्ट कर देता है कि अंग्रेज भारतीयो को आधुनिक बनाने नही बल्कि हमारी गुलामी को स्थाई बनाना चाहते थे। इस पद्धति मे अंग्रेजी भाषा को अनिवार्य माना गया तथा गणित और अभियांत्रिकी जैसे विषय शामिल किए गए। आधुनिक शिक्षा ने भारतीयो में जागरूकता पैदा की क्योंकि वे अन्य देशो व समाजो से अपनी तुलना करने में समर्थ हो गए।

Scanned with CamScanner

"यह नया सामाजिक, शिक्षित वर्ग तत्कालीन आधुनिक मूल्यों को समझने लगा और उसमें लोकतान्त्रिक आदर्शों, उदारवादी विचारों और मानव अधिकारों के प्रति संवेदना पैदा हुई।" शिक्षित वर्ग ने जान लोथम व मिल जैसे राजनैतिक विचारकों को पढ़ा और कई उदारवादी चिन्तकों, विद्वानों के लेखों व भाषणों को सुना तो उनमें भारतीयों के अधिकारों के प्रति चेतना पैदा हुई और इसी ने राष्ट्रवादी भावना के विकास की शुरुआत की।

नयी प्रशासनिक व्यवस्था ने भारत में नव सामाजिक वर्ग को जन्म दिया जो शिक्षित मध्यमवर्ग कहलाया। यह वर्ग मुख्यतः शिक्षा सम्बन्धी व्यवसाय से जुड़ा था। पढ़ा-लिखा होने के कारण यह जागरूक वर्ग था जो समाज का एक गतिशील अंग साबित हुआ। इनके उद्देश्यों में एकता थी और भविष्य के भारत के लिए आशा की भावना भी। इस मध्यमवर्ग ने स्वतन्त्रता व मौलिक अधिकारों का महत्व समझा और अपने लिए इन अधिकारों की माँग करने लगा। राष्ट्रीय आन्दोलन में इस वर्ग की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण थी कि कुछ विद्वान भारतीय राष्ट्रवाद को मध्यम वर्ग की देन भी मानते हैं।

3. प्रेस तथा साहित्य का विकास:-

इसका उपयोग राष्ट्रवादियों ने देश के सामाजिक व राजनैतिक प्रगतिशील विचारों के प्रसार हेतु किया। और एक अखिल भारतीय चेतना का विकास किया। भारतीय समाचार पत्र वास्तव में राष्ट्रवाद का दर्पण बन गए। यह जनता को जागरूक बनाने का और राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ने का सबसे सशक्त माध्यम बने। अंग्रेजों ने लॉर्ड वेलेजली के समय से ही प्रेस पर सेन्सरशिप (प्रतिबन्ध) लगाने (थोपने) की कोशिश की गई किन्तु इस तरह के प्रतिबन्धों ने राष्ट्रवाद को और बढ़ाया। उदाहरणस्वरूप लॉर्ड लिटन के वर्नाकूलर प्रेस एक्ट (देशी भाषाओं में छपने वाले समाचार पत्रों को प्रतिबन्धित किया)

के विरुद्ध भारतीय एक-सूत्र एकजुट होने लगे थे।

4. आर्थिक तथा प्रशासनिक एकीकरण :-

अंग्रेजो ने भारत पर प्रभावी रूप से शासन के लिए तथा अधिकतम आर्थिक लाभ के लिए भारत में एक समान आधुनिक शासनप्रणाली की स्थापना की जिससे सम्पूर्ण देश एक सूत्र में बँध गया क्योंकि अब सभी क्षेत्रो में सबके लिए एक समान नियम थे।

इसके अतिरिक्त प्रभावी आर्थिक शोषण के लिए अंग्रेजो ने अलग-थलग पड़े क्षेत्रो विशेषत: गाँवो को बाजार से जोड़ा जिसके कारण इन क्षेत्रो का अलगाव दूर हुआ अब आर्थिक क्षेत्र में भी एकरूपता स्थापित होने लगी। इस एकीकरण ने भारतीयों के अन्दर राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने में सहयोग दिया।

5. तीव्र संचार एवं परिवहन साधनो का विकास -

व्यापारिक एवं आर्थिक लाभ की दृष्टि से तथा विद्रोहों के समय सैनिको को तीव्रता से प्रसारित करने व प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से अंग्रेजो ने इन साधनो का विकास किया, किन्तु रेलवे, डाक-तार आदि व्यवस्थाओं ने भारत के विभिन्न स्थानों पर रहने वाले लोगो को एक-दूसरे से सतत् सम्बन्ध बनाए रखने में मदद की। परिवहन व्यवस्थाओ ने अप्रत्यक्ष रूप से हमारे सामाजिक जटिलताओं को भी दूर किया। जिससे सामाजिक एकता को बल मिला और राष्ट्रवादी भावना समृद्ध हुई।

" रेलवे भारत में वह कर देगी जो बड़े-बड़े राजवंशो व सम्राटो ने नही किया, वे भारत को एक राष्ट्र नही बना सके। "

Scanned with CamScanner

6- गौरवमयी अतीत की खोज एवं सामाजिक, धार्मिक सुधार आन्दोलन :-

सामाजिक, धार्मिक सुधार आन्दोलनों ने भारतीय समाज को पुनः जगाने का कार्य किया इसके साथ ही कुछ विदेशी इतिहासकारों व भारतीय इतिहासकारों व पुरातत्वविदों ने भारत के गौरवमयी इतिहास की खोज की जिससे भारतीयों को अपने प्राचीन भारतीय समृद्धि का पता चला व भारतीयों में एक नया आत्मविश्वास व मनोबल पैदा हुआ। जो भारतीय अपने आप को अंग्रेजों के समक्ष हीन मानने लगे थे उन्हें अब लगने लगा कि वे तो सभ्यता व संस्कृति में विश्व के मार्ग-दर्शक रहे हैं। विवेकानन्द जैसे विचारकों के व्याख्यानों ने हमारी जड़ता व कमजोरी को झकझोर कर रख दिया।

7- लिटन तथा कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीति और इल्बर्ट बिल विवाद :-

लिटन और कर्जन दोनों वायसरायों ने अपने कार्यकाल में अति निरंकुशता व अतिकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति को स्थापित करने का प्रयास किया। कर्जन ने जब बंग-भंग का निर्णय लिया तो भारतीयों की सहनशीलता की सारी सीमाएँ (हदें) पार हो गई और राष्ट्रवाद अब उग्र राष्ट्रवाद बन गया।

अंग्रेजों की शासन-व्यवस्था में ऐसी न्यायिक प्रणाली कायम थी जिसमें कोई भारतीय न्यायधीश किसी यूरोपीय व्यक्ति की सुनवाई नहीं कर सकता था इस नस्लीय विभेद को दूर करने के लिए इल्बर्ट ने एक बिल प्रस्तुत किया, जिस पर न केवल भारत में वरन् ब्रिटेन ने भी तीखी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की और सभी इसके विरोध में एकजुट हो गए। इस विवाद से भारतीयों में यह विश्वास जगा कि अपने अधिकारों के मुद्दों पर हमें एक होना ही चाहिए।

Scanned with CamScanner

8- अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव :- 19 वी सदी के उत्तरार्द्ध में लगभग सम्पूर्ण विश्व में राष्ट्रवादी भावनाएँ मजबूत हो रही थी। अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम व फ्रांसीसी क्रान्ति तथा उससे उपजा नारा "स्वतन्त्रता, समानता एवं बन्धुत्व" इसका मार्गदर्शन कर रहा था इसी समय इटली में एकीकरण के प्रयासों ने भारतीयो में एक नई चेतना व ऊर्जा पैदा कि की और यंग इटली की तर्ज पर यंग इण्डिया जैसे संस्थाएँ स्थापित की गई।

इसके बाद अबीसीनिया (इथोपिया 1896) की इटली पर तथा जापान की रूस (1905) पर विजय ने यूरोप की अजेयता का मिथक तोड़ दिया और भारतीयों में भी ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ संघर्ष की प्रेरणा मिली।

श्रीमती पुष्पा
असि० प्रो०
(इतिहास)

Scanned with CamScanner